पशुधन द्वारा
जीवन में गुणात्मक सुधार

बिहार सरकार
पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग

पटना सहित राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में जंगली पक्षियों (कौओं) की असमय मृत्यु एवं स्वाईन फीवर के संबंध में आवश्यक सूचना

जंगली पक्षियों (कौओं) की असमय मृत्यु के संबंध में:

पटना सहित राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में कौओं की असमायिक मृत्यु की सूचना प्राप्त होने पर आमजनों के लिये आवश्यक सूचना:

- चूंकि जंगली पक्षी (कौआ) मनुष्य के सीधे सम्पर्क में नहीं आते इसलिए इससे घबराने की आवश्यकता नहीं है। मृत पक्षियों को जलाया या गहरे गड्ढे में दबाया जा सकता है ताकि अन्य पशु/पक्षियों में बीमारी न फैले।
- आम जनों से अनुरोध है कि इस तरह की घटना की सूचना अविलम्ब पशुपालन निदेशालय, बिहार पटना द्वारा विकास भवन में गठित कंट्रोल रूम के दूरभाष संख्याः 0612–2230942 पर दी जाये।
- मृत पक्षियों को नंगे हाथ से न छूए, आवश्यकता पड़ने पर हैंड गल्ब्स का इस्तेमाल करें तथा उपयोग के बाद हाथ को अच्छे से साफ करें।
- मुर्गा एवं मांस अच्छे तरह से पका कर खायें तथा उसके अवशिष्ट को खुले में न फेके।
- पशुपालन निदेशालय द्वारा पशु स्वास्थ्य एवं उत्पादन संस्थान, पटना एवं जिला मुख्यालय स्तर पर विशेषज्ञ पशु चिकित्सकों की टीम गठित की गयी है, जो सूचना प्राप्त होने पर पक्षियों के निस्तारण, सैम्पल संग्रहण तथा क्षेत्रों के सैनिटाईजेशन का कार्य करेगी।
- इसके अतिरिक्त विशेषज्ञ पशु चिकित्सकों, पशु विज्ञान विश्वविद्यालय तथा वन्य जीव विशेषज्ञ की टीम गठित की गयी है, जो अध्ययन कर कारण एवं निराकरण के संबंध में प्रतिवेदन देगी।

स्वाइन फीवर के संबंध में सूचना

- भागलपुर जिला में सूकरों की असामयिक मृत्यु की सूचना प्राप्त होने पर विशेषज्ञ पशु चिकित्सकों द्वारा जाँच करायी गयी। जाँच प्रतिवेदन में प्रतिवेदित किया गया है कि सूकरों में स्वाईन फीवर सदृश्य बीमारी का प्रकोप था। संपुष्टि हेतु रक्त नमूनों एवं अन्य जाँच सामग्री आर0डी0डी0एल0, कोलकाता को भेजा गया है, जिसके रिपोर्ट की प्रतीक्षा है।
- स्वाइन फीवर सिर्फ सुकरों में होता है जो मनुष्यों में नहीं फैलता है।
- **सुकर पालकों को परामर्श दिया जाता है कि सुकरों में बीमारी के लक्षण पाये जाने पर अविलम्ब निकटतम पशु चिकित्सालय में सम्पर्क करें, बीमारी के दो महीने तक पालने हेतु नये सुकर नहीं लाये, सुकरों के बाड़े में ब्लीचींग पाउडर का छिड़काव करें तथा बीमार सुकरों को स्वस्थ सुकरों से अलग रखा जाये।**

पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग, बिहार पटना द्वारा जनहित में प्रचारित